International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

मध्य-पूर्व एशियाई तेल संकट का भारतीय बाज़ार पर प्रभाव

Dr. Vijayant Srivastava[1], Dr. Richa Srivastava[2]

[1]Asst. Professor, (Commerce Dept.) Shri Agrasen P.G. Collage, Muranipur Jhansi.

सारांश

मध्य-पूर्व क्षेत्र वैश्विक कच्चे तेल आपूर्ति का प्रमुख स्रोत है, अतः वहाँ उत्पन्न किसी भी प्रकार का अस्थिरता या संकट विश्व तेल बाज़ार को प्रभावित करता है, जिसका प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष प्रभाव भारत जैसे आयात-निर्भर देशों पर भी पड़ता है। इस अध्ययन में वैश्विक तेल बाज़ार में कीमतों में उतार-चढ़ाव तथा आपूर्ति श्रृंखला में व्यवधानों का भारतीय तेल आयात एवं ऊर्जा सुरक्षा पर प्रभाव का विश्लेषण किया गया है। साथ ही भारतीय बाज़ार एवं अर्थव्यवस्था पर इसके प्रभावों जैसे महंगाई में वृद्धि, परिवहन लागत में बढ़ोतरी तथा उद्योग एवं व्यापार क्षेत्र पर पड़ने वाले दबाव को भी रेखांकित किया गया है। शोध में यह भी पाया गया है कि तेल संकट के कारण भारत की आर्थिक स्थिरता एवं विकास दर पर प्रभाव पड़ता है, जिससे विभिन्न क्षेत्रों की उत्पादन क्षमता एवं उपभोक्ता मूल्य सूचकांक प्रभावित होते हैं। इस समस्या के समाधान हेतु भारत सरकार द्वारा अपनाई गई नीतियों एवं प्रयासों का भी अध्ययन किया गया है, जिनमें रणनीतिक तेल भंडारण, वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों का विकास तथा अंतरराष्ट्रीय सहयोग प्रमुख हैं। अंत में यह निष्कर्ष निकाला गया है कि मध्य-पूर्व तेल संकट का भारतीय अर्थव्यवस्था पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है, अतः ऊर्जा सुरक्षा को सुदृढ़ करने एवं वैकल्पिक ऊर्जा संसाधनों को बढ़ावा देने की आवश्यकता है।

कुंजीशब्द: मध्य-पूर्व एशिया, तेल संकट, भारतीय बाज़ार, ऊर्जा सुरक्षा, महंगाई

I.परिचय

मध्य-पूर्व एशियाई क्षेत्र विश्व के सबसे महत्वपूर्ण तेल उत्पादक क्षेत्रों में से एक है, जहाँ से वैश्विक कच्चे तेल आपूर्ति का एक बड़ा हिस्सा प्राप्त होता है। यह क्षेत्र न केवल ऊर्जा संसाधनों के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि वैश्विक आर्थिक स्थिरता और अंतरराष्ट्रीय व्यापार प्रणाली में भी इसकी अहम भूमिका है। इसी कारण इस क्षेत्र में उत्पन्न होने वाली किसी भी प्रकार की राजनीतिक अस्थिरता, संघर्ष या संकट का प्रभाव केवल क्षेत्रीय स्तर तक सीमित नहीं रहता, बल्कि यह संपूर्ण विश्व अर्थव्यवस्था को प्रभावित करता है।

भारत एक विकासशील और तेल आयात पर अत्यधिक निर्भर देश है, जो अपनी कुल कच्चे तेल आवश्यकता का लगभग 85 प्रतिशत आयात करता है। इसमें से एक बड़ा हिस्सा मध्य-पूर्व देशों जैसे सऊदी अरब, इराक, संयुक्त अरब अमीरात और कुवैत से प्राप्त होता है। इसलिए मध्य-पूर्व में उत्पन्न कोई भी तेल संकट सीधे तौर पर भारत की ऊर्जा सुरक्षा, आयात लागत और आर्थिक स्थिरता को प्रभावित करता है।

हाल के वर्षों में मध्य-पूर्व क्षेत्र में उत्पन्न राजनीतिक तनाव, संघर्ष और आपूर्ति बाधाओं ने वैश्विक तेल बाजार में अस्थिरता पैदा की है। इससे कच्चे तेल की कीमतों में तेजी से उतार-चढ़ाव देखने को मिला है, जिसका प्रभाव वैश्विक स्तर पर महंगाई, परिवहन लागत और औद्योगिक उत्पादन पर पड़ा है। भारत जैसे आयात-निर्भर देशों के लिए यह स्थिति विशेष रूप से चुनौतीपूर्ण रही है।

इस पृष्ठभूमि में प्रस्तुत शोध पत्र "मध्य-पूर्व एशियाई तेल संकट का भारतीय बाज़ार पर प्रभाव" का उद्देश्य तेल संकट के कारणों, उसके वैश्विक प्रभावों तथा भारतीय अर्थव्यवस्था पर पड़ने वाले प्रभावों का विश्लेषण करना है। साथ ही यह अध्ययन यह भी स्पष्ट करता है कि भारत सरकार द्वारा अपनाई गई नीतियाँ और रणनीतियाँ इस संकट के प्रभाव को कम करने में किस प्रकार सहायक सिद्ध हो रही हैं।

II.मध्य-पूर्व एशियाई तेल संकट: पृष्ठभूमि एवं कारण

संघर्ष अचानक 28 फरवरी को शुरू हुआ। संयुक्त राज्य अमेरिका और इज़राइल ने ईरान पर बड़े पैमाने पर हमले किए। उन्होंने परमाणु स्थलों और प्रमुख अधिकारियों को निशाना बनाया, जिनमें सर्वोच्च नेता अली ख़ामेनेई भी शामिल थे। ईरान ने तुरंत जवाब देते हुए इज़राइल और अमेरिकी सैन्य ठिकानों पर मिसाइलों और ड्रोन से हमले किए। स्थिति तब और गंभीर हो गई जब ईरान ने होर्मुज़ जलडमरूमध्य को बंद कर दिया। यह संकरा समुद्री मार्ग दुनिया के लगभग पाँचवें हिस्से के तेल परिवहन का माध्यम है।

कई सप्ताहों तक समुद्री परिवहन (शिपिंग) गंभीर रूप से प्रभावित रहा। वार्ताओं के बाद लगभग 8 अप्रैल के आसपास एक नाजुक दो-सप्ताह का युद्धविराम (सीज़फायर) शुरू हुआ। इस समझौते के तहत ईरान को जलडमरूमध्य को पुनः खोलने के लिए कहा गया। इसके बावजूद तनाव अभी भी बहुत अधिक बना हुआ है। खाड़ी क्षेत्र में ड्रोन हमले जारी हैं। लेबनान में हिज़्बुल्लाह जैसे समूहों के खिलाफ संघर्ष भी बढ़ गया है। इन घटनाओं के कारण कई बार तेल की कीमतें 110 डॉलर प्रति बैरल से ऊपर पहुँच गईं। विशेषज्ञ इस बात पर कड़ी निगरानी रख रहे हैं कि शांति कितने समय तक बनी रहती है।

भारत पर इसका हर प्रभाव महसूस किया जा रहा है। देश अपनी तेल आवश्यकताओं का लगभग 85 प्रतिशत आयात करता है। इस कच्चे तेल (क्रूड ऑयल) का लगभग 50 से 60 प्रतिशत हिस्सा इराक, सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) और कुवैत जैसे मध्य-पूर्वी देशों से आता है। कई तेल टैंकरों को इस संकटग्रस्त जलडमरूमध्य से होकर गुजरना पड़ता है। परिणामस्वरूप, यह संघर्ष इस वर्ष भारत की सकल घरेलू उत्पाद (GDP) वृद्धि दर को एक पूर्ण प्रतिशत अंक तक कम कर सकता है। महंगाई (मुद्रास्फीति) में भी अतिरिक्त 1 से 1.5 प्रतिशत तक की वृद्धि हो सकती है। ये आँकड़े उन विद्यार्थियों के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं जो अपने भविष्य के करियर की योजना बना रहे हैं।

III.वैश्विक तेल बाज़ार पर तेल संकट का प्रभाव

मध्य-पूर्व एशियाई तेल संकट का वैश्विक तेल बाज़ार पर अत्यंत व्यापक, जटिल और दीर्घकालिक प्रभाव पड़ता है, क्योंकि यह क्षेत्र विश्व के कुल कच्चे तेल उत्पादन और निर्यात का एक बड़ा हिस्सा नियंत्रित करता है। विश्व की ऊर्जा आपूर्ति व्यवस्था में मध्य-पूर्व की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है, और इसी कारण यहाँ उत्पन्न किसी भी प्रकार की राजनीतिक अस्थिरता, युद्ध, आतंकी घटनाएँ, प्रतिबंध (sanctions) या उत्पादन में कमी सीधे तौर पर वैश्विक ऊर्जा प्रणाली को प्रभावित करती हैं।

तेल संकट के दौरान सबसे पहला प्रभाव कच्चे तेल की आपूर्ति श्रृंखला पर पड़ता है। उत्पादन केंद्रों में बाधा आने या निर्यात मार्गों (जैसे होर्मुज जलडमरूमध्य) में अस्थिरता के कारण अंतरराष्ट्रीय बाजार में तेल की उपलब्धता घट जाती है। जब आपूर्ति कम होती है और मांग स्थिर या बढ़ती रहती है, तो वैश्विक बाजार में तेल की कीमतों में तीव्र वृद्धि देखने को मिलती है। इस स्थिति को मूल्य अस्थिरता कहा जाता है, जो वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए अत्यंत हानिकारक होती है।

तेल कीमतों में वृद्धि का सीधा प्रभाव विभिन्न देशों की अर्थव्यवस्थाओं पर पड़ता है, विशेषकर उन देशों पर जो तेल आयात पर अत्यधिक निर्भर हैं। इससे परिवहन लागत बढ़ती है, उत्पादन लागत में वृद्धि होती है और वस्तुओं व सेवाओं

की कीमतों में बढ़ोतरी होती है, जिससे वैश्विक महंगाई को बढ़ावा मिलता है। इसके परिणामस्वरूप उपभोक्ता मांग में कमी आती है और आर्थिक विकास की गति धीमी हो सकती है।

इसके अतिरिक्त, तेल संकट के समय अंतरराष्ट्रीय वित्तीय बाजारों में भी अस्थिरता उत्पन्न होती है। निवेशक अनिश्चितता के कारण सुरक्षित निवेश विकल्पों की ओर रुख करते हैं, जिससे शेयर बाजारों में उतार-चढ़ाव बढ़ जाता है। ऊर्जा कंपनियों के लाभ और निवेश योजनाएँ भी प्रभावित होती हैं।

तेल निर्यातक देशों के संगठन की भूमिका भी इस स्थिति में अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। OPEC द्वारा उत्पादन में कटौती या वृद्धि के निर्णय वैश्विक तेल कीमतों को नियंत्रित करने में निर्णायक भूमिका निभाते हैं। हालांकि, कई बार इन नीतियों से तेल बाजार में और अधिक असंतुलन पैदा हो जाता है।

इसके अलावा, तेल संकट का प्रभाव केवल आर्थिक क्षेत्र तक सीमित नहीं रहता, बल्कि यह भू-राजनीतिक (geopolitical) तनाव को भी बढ़ाता है। तेल संसाधनों पर नियंत्रण और ऊर्जा सुरक्षा को लेकर देशों के बीच प्रतिस्पर्धा बढ़ जाती है, जिससे अंतरराष्ट्रीय संबंधों में तनाव उत्पन्न हो सकता है।

दीर्घकालिक दृष्टि से देखा जाए तो तेल संकट वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों जैसे सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा और जैव ईंधन के विकास को भी प्रोत्साहित करता है, क्योंकि देश ऊर्जा निर्भरता कम करने की दिशा में प्रयास करते हैं।

अतः निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि मध्य-पूर्व एशियाई तेल संकट वैश्विक तेल बाज़ार को न केवल आर्थिक रूप से प्रभावित करता है, बल्कि यह ऊर्जा सुरक्षा, अंतरराष्ट्रीय व्यापार, वित्तीय स्थिरता और भू-राजनीतिक संतुलन को भी गहराई से प्रभावित करता है।

IV.मध्य पूर्व संघर्ष का भारत की अर्थव्यवस्था और समाज पर प्रभाव

तेल इस युद्ध और भारत की दैनिक अर्थव्यवस्था के बीच सबसे मजबूत कड़ी है। भारत प्रतिदिन लगभग 5.5 मिलियन बैरल कच्चे तेल (क्रूड ऑयल) का आयात करता है। मार्च की शुरुआत में जब होर्मुज़ जलडमरूमध्य बंद हुआ, तो तेल की आपूर्ति में तेज़ी से कमी आ गई। इसके परिणामस्वरूप तेल की कीमतें बहुत तेजी से बढ़ने लगीं। युद्धविराम लागू होने के बाद भी तेल की लागत सामान्य स्तर से अधिक बनी हुई है, क्योंकि समुद्री परिवहन (शिपिंग) अब भी जोखिमपूर्ण माना जा रहा है।

- बसों, ट्रेनों और ट्रकों के परिवहन खर्च में वृद्धि होती है। इसके कारण खाद्य पदार्थों से लेकर कपड़ों तक लगभग सभी वस्तुएँ महंगी हो जाती हैं। डिलीवरी शुल्क बढ़ने से दुकानों में वस्तुओं के बिक्री मूल्य भी अधिक हो जाते हैं।
- कारखानों और बिजली संयंत्रों को ईंधन पर अतिरिक्त खर्च करना पड़ता है। वे इस बढ़ी हुई लागत को उत्पादों की कीमतों में वृद्धि करके उपभोक्ताओं पर डाल देते हैं। परिणामस्वरूप साबुन, कपड़े, पैकेज्ड खाद्य पदार्थ और अन्य दैनिक उपयोग की वस्तुएँ महंगी हो जाती हैं।
- किसानों को ट्रैक्टरों और सिंचाई पंपों के लिए डीज़ल पर अधिक खर्च करना पड़ता है। इससे कृषि उत्पादन की लागत बढ़ जाती है, जिसका प्रभाव घरों के किराना खर्च पर भी पड़ता है। बाजार में सब्जियों, अनाज और अन्य कृषि उत्पादों की कीमतें बढ़ सकती हैं।

एक सरल उदाहरण इस स्थिति के वास्तविक प्रभाव को दर्शाता है। दिल्ली का एक मध्यमवर्गीय परिवार अब हर महीने अपने स्कूटर के ईंधन पर लगभग 15 से 20 प्रतिशत अधिक खर्च कर रहा है। इसके कारण उनका मासिक बजट पहले की तुलना में अधिक दबाव में आ गया है। छोटी-छोटी बचतें भी तेजी से समाप्त होने लगती हैं।

कॉलेजों में पढ़ने वाले छात्र भी इसका प्रभाव महसूस करते हैं, क्योंकि कैंटीन में मिलने वाले खाद्य पदार्थों की कीमतें बढ़ जाती हैं। आयातित कच्चे माल से बनने वाली नोटबुक और अन्य शैक्षणिक सामग्री भी अधिक महंगी हो जाती हैं।

ये परिवर्तन भले ही छोटे दिखाई दें, लेकिन जब पूरे देश में लाखों लोगों पर इनका प्रभाव पड़ता है, तो उनका कुल आर्थिक असर बहुत बड़ा हो जाता है।

- इसके बाद व्यापार क्षेत्र को भी गंभीर चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। मध्य पूर्व भारत से बड़ी मात्रा में वस्तुओं की खरीद करता है। रत्न एवं आभूषण, रसायन, खाद्य उत्पाद तथा वस्त्रों के निर्यात की गति धीमी हो गई है। शिपिंग कंपनियाँ अधिक शुल्क वसूल रही हैं या लंबी समुद्री मार्गों का उपयोग कर रही हैं। इसके परिणामस्वरूप लॉजिस्टिक्स (परिवहन एवं आपूर्ति श्रृंखला) की लागत में तेज़ वृद्धि हो रही है।
- भारत को उर्वरकों (फर्टिलाइज़र्स) और पॉलिमर जैसे महत्वपूर्ण औद्योगिक कच्चे माल का बड़ा हिस्सा खाड़ी क्षेत्र के मार्गों से प्राप्त होता है। संघर्ष के कारण कभी-कभी उद्योगों को इन वस्तुओं की कमी का सामना करना पड़ता है या उन्हें अधिक कीमत चुकानी पड़ती है। इससे निर्माण परियोजनाओं में देरी होती है और नए घरों, सड़कों तथा अन्य बुनियादी ढाँचे के निर्माण की लागत बढ़ जाती है।
- इसके कारण विदेश में अध्ययन करने वाले छात्रों के लिए हवाई यात्रा महंगी हो जाती है। विमान टिकटों की कीमतों में वृद्धि होती है और यात्रा समय भी बढ़ सकता है। ये सभी परिवर्तन व्यवसायों, निवेशकों और श्रमिकों के लिए अनिश्चितता का वातावरण पैदा करते हैं।

हालाँकि, कुछ क्षेत्रों के लिए यह स्थिति नए अवसर भी लेकर आती है। अब कंपनियाँ रूस और अन्य मित्र देशों से अधिक मात्रा में तेल खरीद रही हैं। साथ ही, भारत में नवीकरणीय ऊर्जा (रिन्यूएबल एनर्जी) परियोजनाओं को तेज़ी से बढ़ावा दिया जा रहा है। सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, ऊर्जा भंडारण और हरित प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों में रोजगार की संभावनाएँ बढ़ रही हैं। दूरदर्शी और जागरूक छात्र इन उभरते क्षेत्रों में कौशल विकसित करके अपने लिए बेहतर करियर अवसर प्राप्त कर सकते हैं।

- लगभग 90 लाख भारतीय खाड़ी देशों में रहकर काम करते हैं। वे हर वर्ष भारत में लगभग 50 अरब डॉलर भेजते हैं। यह राशि भारत को प्राप्त होने वाले कुल प्रेषण (रेमिटेंस) का लगभग 38 प्रतिशत है। युद्ध और क्षेत्रीय अस्थिरता ने इन प्रवासी भारतीय श्रमिकों के बीच चिंता और भय का माहौल पैदा कर दिया है। इनमें से अधिकांश लोग निर्माण (कंस्ट्रक्शन), तेल सेवाओं, आतिथ्य (हॉस्पिटैलिटी) और खुदरा व्यापार (रिटेल) जैसे क्षेत्रों में कार्यरत हैं।
- यह वापसी मुख्य रूप से रोजगार छिन जाने या सुरक्षा संबंधी चिंताओं के कारण हुई है। केरल, उत्तर प्रदेश और आंध्र प्रदेश जैसे राज्यों के परिवारों पर इसका सबसे अधिक प्रभाव पड़ रहा है, क्योंकि इन राज्यों से बड़ी संख्या में लोग खाड़ी देशों में काम करते हैं। यद्यपि पिछले वर्ष प्रेषण का स्तर उच्च बना रहा, विशेषज्ञों का मानना है कि यदि संघर्ष लंबे समय तक जारी रहता है, तो भारत आने वाली प्रेषण राशि में 10 से 30 प्रतिशत तक की कमी आ सकती है।

एक वास्तविक जीवन के उदाहरण पर विचार करें। दुबई में कार्यरत एक पिता हर महीने अपने बेटे की कॉलेज फीस और परिवार के खर्चों के लिए धन भेजता है। यदि किसी कारणवश उसकी नौकरी अचानक समाप्त हो जाए, तो परिवार को अपने दैनिक खर्चों और बिलों का भुगतान करने में कठिनाई होने लगती है। ऐसी स्थिति में उन्हें अपने बच्चे की उच्च शिक्षा भी कुछ समय के लिए रोकनी पड़ सकती है। इस प्रकार के परिवारों से आने वाले विद्यार्थी अच्छी तरह समझ सकते हैं कि दुनिया के किसी दूसरे हिस्से में होने वाली घटनाएँ और अंतरराष्ट्रीय समाचार किस प्रकार सीधे उनकी आर्थिक स्थिति, जेब खर्च और भविष्य की योजनाओं को प्रभावित कर सकते हैं।

- ऊर्जा की बढ़ती कीमतें पूरे देश में समग्र महंगाई को बढ़ा देती हैं। खुदरा कीमतों में अतिरिक्त 1.5 प्रतिशत या उससे अधिक की वृद्धि हो सकती है। महंगे तेल आयातों पर अधिक खर्च होने के कारण भारतीय रुपया अमेरिकी

डॉलर के मुकाबले कमजोर पड़ सकता है। इसका परिणाम यह होता है कि विदेशों से आयात की जाने वाली सभी वस्तुएँ अधिक महंगी हो जाती हैं।

- निवेशक कुछ समय तक सतर्क बने रहे और निवेश संबंधी निर्णयों में सावधानी बरतने लगे। सरकार भी आर्थिक स्थिरीकरण कोष (Economic Stabilisation Fund) और समग्र आर्थिक स्थिति पर लगातार निगरानी रख रही है। आवश्यकता पड़ने पर आर्थिक विकास को समर्थन देने के लिए नए कदम और नीतियाँ लागू की जा सकती हैं।

दैनिक जीवन में भी इस संकट का प्रभाव अनेक रूपों में दिखाई देता है। विद्यार्थियों को नोटबुक, स्टेशनरी, नाश्ते और अन्य दैनिक उपयोग की वस्तुओं के लिए अधिक कीमत चुकानी पड़ सकती है। परिवारों को अपने मासिक बजट में छोटी-छोटी विलासिताओं और गैर-जरूरी खर्चों में कटौती करनी पड़ती है। पहले की तुलना में खर्चों की योजना अधिक सावधानी और नियंत्रण के साथ बनानी पड़ती है।

फिर भी भारत की मजबूत आर्थिक बुनियाद उसे कई अन्य देशों की तुलना में इस प्रकार के झटकों को बेहतर ढंग से सहने में सहायता करती है। देश ने ऐसे रणनीतिक तेल भंडार (Strategic Oil Reserves) विकसित किए हैं, जो लगभग 60 दिनों या उससे अधिक समय तक की आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम हैं। इसके अतिरिक्त, भारत ने रूस से तेल की खरीद बढ़ाकर खाड़ी क्षेत्र पर अपनी निर्भरता को कम करने का प्रयास किया है। ये कदम ऊर्जा सुरक्षा को मजबूत बनाने और अंतरराष्ट्रीय संकटों के आर्थिक प्रभाव को सीमित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

V.भारतीय बाज़ार एवं अर्थव्यवस्था पर तेल संकट का प्रभाव

भारत विश्व के सबसे बड़े कच्चे तेल आयातकों में से एक है और अपनी कुल तेल आवश्यकता का लगभग 85% आयात करता है। इसलिए अंतरराष्ट्रीय बाजार में तेल की कीमतों में वृद्धि या आपूर्ति में बाधा भारतीय अर्थव्यवस्था को सीधे प्रभावित करती है। तेल संकट केवल ऊर्जा क्षेत्र तक सीमित नहीं रहता, बल्कि इसका प्रभाव महंगाई, परिवहन, उद्योग, व्यापार तथा आर्थिक विकास पर भी व्यापक रूप से पड़ता है। जब कच्चे तेल की कीमतें बढ़ती हैं, तो उत्पादन, वितरण और परिवहन की लागत बढ़ने लगती है, जिससे वस्तुओं और सेवाओं की कीमतों में वृद्धि होती है।

- **महंगाई पर प्रभाव**

तेल संकट का सबसे प्रत्यक्ष प्रभाव महंगाई पर दिखाई देता है। पेट्रोल, डीजल और एलपीजी की कीमतों में वृद्धि से परिवहन और उत्पादन लागत बढ़ जाती है, जिसका असर लगभग सभी उपभोक्ता वस्तुओं पर पड़ता है। खाद्य पदार्थों, निर्माण सामग्री, दैनिक उपयोग की वस्तुओं तथा सेवाओं की कीमतें बढ़ने लगती हैं। आर्थिक अध्ययनों के अनुसार कच्चे तेल की कीमत में प्रत्येक 10 डॉलर प्रति बैरल की वृद्धि से उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (CPI) में लगभग 0.3 से 0.5 प्रतिशत अंक तथा थोक मूल्य सूचकांक (WPI) में लगभग 1 प्रतिशत तक वृद्धि हो सकती है। इससे लोगों की क्रय शक्ति प्रभावित होती है और घरेलू बजट पर अतिरिक्त दबाव पड़ता है।

- **परिवहन पर प्रभाव**

भारत में अधिकांश माल एवं यात्री परिवहन पेट्रोलियम ईंधन पर आधारित है। तेल संकट के दौरान डीजल और पेट्रोल की कीमतों में वृद्धि से सड़क, रेल तथा हवाई परिवहन की लागत बढ़ जाती है। मालभाड़ा बढ़ने से वस्तुओं की अंतिम कीमतों में वृद्धि होती है। एयरलाइंस की परिचालन लागत का लगभग 30–40 प्रतिशत हिस्सा विमान ईंधन पर निर्भर होता है, इसलिए तेल की कीमतों में वृद्धि का सीधा प्रभाव हवाई किरायों पर पड़ता है। परिवहन लागत बढ़ने से लॉजिस्टिक्स, ई-कॉमर्स और आपूर्ति श्रृंखला संचालन भी महंगे हो जाते हैं।

- **उद्योग एवं व्यापार पर प्रभाव**

तेल संकट का प्रभाव औद्योगिक उत्पादन और व्यापारिक गतिविधियों पर भी पड़ता है। पेट्रोकेमिकल, उर्वरक, सीमेंट, इस्पात और विनिर्माण उद्योग ऊर्जा तथा कच्चे माल के रूप में तेल पर निर्भर रहते हैं। तेल की कीमतें बढ़ने से उत्पादन लागत में वृद्धि होती है, जिससे उद्योगों का लाभ कम हो सकता है और उत्पाद महंगे हो जाते हैं। इसके अतिरिक्त भारत का आयात बिल बढ़ जाता है, जिससे व्यापार घाटा (Trade Deficit) और चालू खाता घाटा (Current Account Deficit) बढ़ने की संभावना रहती है। विदेशी मुद्रा भंडार पर दबाव बढ़ता है और भारतीय रुपये के मूल्य में गिरावट आ सकती है।

तालिका 1: तेल संकट का भारतीय अर्थव्यवस्था पर सांख्यिकीय प्रभाव

आर्थिक संकेतक	अनुमानित प्रभाव
कच्चे तेल में $10 प्रति बैरल वृद्धि	CPI में 0.3–0.5% वृद्धि
कच्चे तेल में $10 प्रति बैरल वृद्धि	WPI में 0.8–1.0% वृद्धि
डीजल कीमतों में 10% वृद्धि	परिवहन लागत में 5–7% वृद्धि
तेल कीमत में $1 प्रति बैरल वृद्धि	आयात बिल में ₹8,000–10,000 करोड़ वार्षिक वृद्धि
तेल कीमतों में 10% वृद्धि	GDP वृद्धि दर में 0.2–0.4 प्रतिशत अंक की कमी

तेल संकट भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए एक गंभीर चुनौती है क्योंकि इसका प्रभाव महंगाई, परिवहन, उद्योग और व्यापार के माध्यम से पूरे आर्थिक तंत्र पर पड़ता है। बढ़ती तेल कीमतें उपभोक्ताओं और उद्योगों दोनों की लागत बढ़ाती हैं तथा आर्थिक विकास की गति को प्रभावित करती हैं। इसलिए भारत के लिए ऊर्जा स्रोतों का विविधीकरण, नवीकरणीय ऊर्जा का विस्तार, इलेक्ट्रिक वाहनों को बढ़ावा तथा तेल आयात पर निर्भरता कम करना दीर्घकालिक आर्थिक स्थिरता के लिए आवश्यक है।

VI.तेल संकट से निपटने हेतु भारत सरकार की नीतियाँ एवं प्रयास

- **रणनीतिक पेट्रोलियम भंडार की स्थापना**

भारत सरकार ने तेल संकट की स्थिति से निपटने के लिए आपातकालीन कच्चे तेल भंडार विकसित किए हैं। इन भंडारों का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि अंतरराष्ट्रीय बाजार में आपूर्ति बाधित होने या कीमतों में अत्यधिक वृद्धि होने पर भी देश की ऊर्जा आवश्यकताएँ पूरी की जा सकें। यह भंडार राष्ट्रीय ऊर्जा सुरक्षा को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

- **तेल आयात स्रोतों का विविधीकरण**

भारत ने अपनी तेल आयात नीति में विविधता लाने पर जोर दिया है ताकि किसी एक क्षेत्र पर निर्भरता कम हो सके। पहले भारत मुख्यतः मध्य-पूर्व देशों से तेल आयात करता था, लेकिन अब रूस, अमेरिका, अफ्रीकी देशों और अन्य ऊर्जा उत्पादक देशों से भी कच्चे तेल का आयात बढ़ाया गया है। इससे आपूर्ति जोखिम कम हुआ है और ऊर्जा सुरक्षा में स्थिरता आई है।

- **वैकल्पिक एवं नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों का विकास**

सरकार ने पारंपरिक ईंधनों पर निर्भरता कम करने के लिए सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, जलविद्युत और जैव ईंधन (biofuels) को बढ़ावा दिया है। राष्ट्रीय सौर मिशन जैसी योजनाओं के माध्यम से स्वच्छ ऊर्जा उत्पादन को प्रोत्साहित किया जा रहा है, जिससे दीर्घकाल में तेल पर निर्भरता कम हो सके।

- **ऊर्जा संरक्षण एवं ईंधन दक्षता कार्यक्रम**

भारत सरकार ने ऊर्जा के कुशल उपयोग को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न योजनाएँ लागू की हैं, जैसे कि ऊर्जा दक्ष उपकरणों का उपयोग, उद्योगों में ऊर्जा प्रबंधन प्रणाली और जागरूकता अभियान। इन प्रयासों का उद्देश्य अनावश्यक तेल खपत को कम करना और संसाधनों का अधिकतम उपयोग सुनिश्चित करना है।

- **विद्युत वाहनों को प्रोत्साहन**

सरकार ने पेट्रोल और डीजल वाहनों पर निर्भरता कम करने के लिए इलेक्ट्रिक वाहनों के उपयोग को बढ़ावा दिया है। FAME (Faster Adoption and Manufacturing of Hybrid and Electric Vehicles) जैसी योजनाओं के माध्यम से EVs को सब्सिडी और प्रोत्साहन प्रदान किया जा रहा है, जिससे ईंधन आयात पर दबाव कम हो सके।

- **अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा सहयोग एवं समझौते**

भारत ने विभिन्न देशों के साथ ऊर्जा क्षेत्र में सहयोग बढ़ाया है ताकि तेल आपूर्ति स्थिर बनी रहे। OPEC देशों सहित रूस, अमेरिका और अन्य प्रमुख तेल उत्पादकों के साथ दीर्घकालिक समझौते किए गए हैं। यह कूटनीतिक प्रयास ऊर्जा सुरक्षा को मजबूत करने में सहायक है।

- **तेल मूल्य स्थिरीकरण नीतियाँ**

घरेलू बाजार में ईंधन की कीमतों में अत्यधिक उतार-चढ़ाव को नियंत्रित करने के लिए सरकार समय-समय पर करों में समायोजन और सब्सिडी नीतियों का उपयोग करती है। इसका उद्देश्य आम जनता पर तेल मूल्य वृद्धि के प्रभाव को कम करना और आर्थिक स्थिरता बनाए रखना है।

VII.वर्तमान तेल संकट की स्थिति

एशिया की अर्थव्यवस्था ऊर्जा के लिए मुख्य रूप से मध्य-पूर्व के देशों—सऊदी अरब, इराक, संयुक्त अरब अमीरात (UAE), कुवैत और कतर—पर निर्भर है। भारत, चीन, जापान तथा दक्षिण कोरिया जैसे बड़े आयातक देशों की कच्चे तेल की आवश्यकता का बड़ा भाग इसी क्षेत्र से पूरा होता है। हाल के वर्षों में मध्य-पूर्व में बढ़ते भू-राजनीतिक तनाव, विशेषकर ईरान से जुड़े घटनाक्रम तथा हॉर्मुज़ जलडमरूमध्य में आपूर्ति संबंधी जोखिमों ने एशियाई देशों की ऊर्जा सुरक्षा पर गंभीर प्रभाव डाला है। हॉर्मुज़ जलडमरूमध्य विश्व के सबसे महत्वपूर्ण तेल परिवहन मार्गों में से एक है, जहाँ से वैश्विक समुद्री तेल व्यापार का बड़ा हिस्सा गुजरता है। इस मार्ग में किसी भी प्रकार का व्यवधान एशिया के लिए तेल आपूर्ति, परिवहन लागत तथा ऊर्जा कीमतों में अस्थिरता उत्पन्न कर सकता है।

तेल संकट का सबसे अधिक प्रभाव उन एशियाई देशों पर पड़ता है जो अपनी ऊर्जा आवश्यकताओं के लिए आयातित कच्चे तेल पर अत्यधिक निर्भर हैं। तेल की अंतरराष्ट्रीय कीमतों में वृद्धि से पेट्रोल, डीज़ल, विमान ईंधन तथा औद्योगिक ईंधनों की लागत बढ़ जाती है, जिससे परिवहन, कृषि, विनिर्माण तथा विद्युत उत्पादन की लागत में भी वृद्धि होती है। परिणामस्वरूप महँगाई बढ़ती है, आर्थिक विकास की गति प्रभावित होती है तथा सरकारों पर ईंधन सब्सिडी का अतिरिक्त वित्तीय भार पड़ता है। भारत सहित कई एशियाई देशों ने ऊर्जा स्रोतों में विविधीकरण, रणनीतिक पेट्रोलियम भंडार तथा वैकल्पिक ऊर्जा के विकास पर विशेष बल देना प्रारम्भ किया है ताकि भविष्य में इस प्रकार के संकटों का प्रभाव कम किया जा सके।

इसके अतिरिक्त, हाल की परिस्थितियों में एशिया की तेल आपूर्ति श्रृंखला में अस्थिरता, शिपिंग बीमा लागत में वृद्धि तथा समुद्री परिवहन जोखिमों ने तेल आयात को और अधिक महँगा बना दिया है। कुछ अवधियों में एशिया के लिए मध्य-पूर्व से तेल आयात में उल्लेखनीय गिरावट दर्ज की गई, जबकि कई देशों ने रणनीतिक भंडारों का उपयोग तथा वैकल्पिक आपूर्ति स्रोतों की तलाश शुरू की। यह स्थिति स्पष्ट करती है कि एशिया की ऊर्जा सुरक्षा केवल तेल उत्पादन पर नहीं बल्कि सुरक्षित समुद्री व्यापार मार्गों, राजनीतिक स्थिरता तथा अंतरराष्ट्रीय सहयोग पर भी निर्भर करती है।

तालिका 1: एशिया में मध्य-पूर्व तेल संकट का वर्तमान परिदृश्य

संकेतक	वर्तमान स्थिति	एशिया पर प्रभाव
प्रमुख तेल आपूर्ति क्षेत्र	मध्य-पूर्व (सऊदी अरब, इराक, संयुक्त अरब अमीरात (UAE), कुवैत, कतर)	एशिया की ऊर्जा आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए मध्य-पूर्व पर अत्यधिक निर्भरता
प्रमुख जोखिम	हॉर्मुज़ जलडमरूमध्य में भू-राजनीतिक तनाव, समुद्री मार्गों में व्यवधान तथा आपूर्ति संबंधी अनिश्चितता	तेल आपूर्ति बाधित होने की संभावना, ऊर्जा सुरक्षा पर नकारात्मक प्रभाव
कच्चे तेल की कीमत	अंतरराष्ट्रीय बाजार में भू-राजनीतिक तनाव के कारण कीमतों में लगातार उतार-चढ़ाव	पेट्रोल, डीज़ल एवं अन्य ईंधनों की कीमतों में वृद्धि, परिवहन लागत बढ़ना
एशियाई तेल आयात	कई अवधियों में मध्य-पूर्व से तेल आयात में कमी तथा वैकल्पिक स्रोतों की खोज	ऊर्जा सुरक्षा पर दबाव, आयात लागत में वृद्धि
आर्थिक प्रभाव	महँगाई, उत्पादन लागत, परिवहन व्यय तथा सरकारी वित्तीय भार में वृद्धि	आर्थिक विकास की गति धीमी होना तथा औद्योगिक प्रतिस्पर्धा प्रभावित होना
प्रभावित क्षेत्र	परिवहन, उद्योग, कृषि, बिजली उत्पादन, विमानन एवं विनिर्माण क्षेत्र	उत्पादन लागत एवं उपभोक्ता वस्तुओं के मूल्य में वृद्धि, आपूर्ति श्रृंखला प्रभावित
सरकारी प्रतिक्रिया	रणनीतिक पेट्रोलियम भंडार का निर्माण, तेल आयात स्रोतों का विविधीकरण, नवीकरणीय ऊर्जा को प्रोत्साहन	दीर्घकालिक ऊर्जा सुरक्षा मजबूत करना तथा आयात निर्भरता कम करना
भविष्य की चुनौती	क्षेत्रीय राजनीतिक अस्थिरता, आपूर्ति श्रृंखला में बाधाएँ तथा वैश्विक ऊर्जा बाजार की अनिश्चितता	ऊर्जा आत्मनिर्भरता, वैकल्पिक ईंधनों एवं स्वच्छ ऊर्जा प्रौद्योगिकियों के विकास की आवश्यकता

निष्कर्षतः, मध्य-पूर्व में उत्पन्न तेल संकट एशिया के लिए केवल ऊर्जा आपूर्ति की समस्या नहीं है, बल्कि यह आर्थिक स्थिरता, औद्योगिक विकास, महँगाई नियंत्रण तथा राष्ट्रीय ऊर्जा सुरक्षा से जुड़ा एक बहुआयामी मुद्दा है। भारत सहित अधिकांश एशियाई देशों के लिए ऊर्जा स्रोतों का विविधीकरण, नवीकरणीय ऊर्जा का विस्तार, रणनीतिक पेट्रोलियम भंडारों का सुदृढ़ीकरण तथा पुनर्चक्रित और टिकाऊ संसाधनों के उपयोग को बढ़ावा देना भविष्य की ऊर्जा चुनौतियों से निपटने के लिए अत्यंत आवश्यक हो गया है।

VIII.निष्कर्ष

मध्य-पूर्व एशियाई तेल संकट का भारतीय बाज़ार एवं अर्थव्यवस्था पर गहरा और व्यापक प्रभाव पड़ता है, क्योंकि भारत अपनी ऊर्जा आवश्यकताओं के लिए अत्यधिक हद तक आयातित कच्चे तेल पर निर्भर है। वैश्विक तेल आपूर्ति में किसी भी प्रकार की बाधा या अस्थिरता सीधे तौर पर भारतीय अर्थव्यवस्था की संरचना को प्रभावित करती है। इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि तेल संकट के दौरान तेल की कीमतों में वृद्धि से महंगाई बढ़ती है, परिवहन लागत में वृद्धि होती है तथा उद्योग एवं व्यापारिक गतिविधियाँ प्रभावित होती हैं। इसके परिणामस्वरूप आम जनता की क्रय शक्ति घटती है और आर्थिक विकास की गति पर भी दबाव पड़ता है।

इसके अतिरिक्त, तेल संकट का प्रभाव केवल आर्थिक क्षेत्र तक सीमित नहीं रहता, बल्कि यह वित्तीय बाजार, विदेशी मुद्रा विनिमय दर, व्यापार संतुलन तथा रोजगार के अवसरों को भी प्रभावित करता है। विशेष रूप से आयात बिल में

वृद्धि होने से चालू खाता घाटा बढ़ता है और भारतीय रुपये पर दबाव पड़ता है। हालांकि, भारत सरकार द्वारा अपनाई गई नीतियाँ जैसे रणनीतिक पेट्रोलियम भंडार, आयात स्रोतों का विविधीकरण, नवीकरणीय ऊर्जा का विकास तथा इलेक्ट्रिक वाहनों को बढ़ावा देना इस संकट के प्रभाव को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।
अंततः यह कहा जा सकता है कि मध्य-पूर्व तेल संकट भारत के लिए एक गंभीर आर्थिक चुनौती है, लेकिन साथ ही यह ऊर्जा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता और वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों के विकास की आवश्यकता को भी उजागर करता है। यदि भारत दीर्घकालिक ऊर्जा रणनीति के तहत नवीकरणीय ऊर्जा, ईंधन दक्षता और तकनीकी नवाचार को और अधिक प्रोत्साहित करता है, तो भविष्य में ऐसे संकटों के प्रभाव को काफी हद तक कम किया जा सकता है।

संदर्भ सूची-

1. गुप्ता, आर., गोज़गोर, जी., काया, एच., एवं डेमिर, ई. (2018). व्यापार प्रवाहों पर भू-राजनीतिक जोखिमों के प्रभाव: ग्रैविटी मॉडल से प्राप्त साक्ष्य। यूरेशियन इकोनॉमिक रिव्यू।
2. हबीबी, एन. (2025). मध्य पूर्व के भू-अर्थशास्त्रीय परिवर्तन में चीन की भूमिका। क्राउन सेंटर फॉर मिडिल ईस्ट स्टडीज़।
3. इस्पास, ए. एम. (2025). ईरान और इज़राइल के बीच संघर्ष का विकास। एनल्स ऑफ द एकेडमी ऑफ रोमानियन साइंटिस्ट्स सीरीज़ ऑन मिलिट्री साइंसेज़, 17(3), 56–60।
4. इस्साक, एल. (2025). संकट के समय महाशक्तियों का सहयोग: ईरान और यूक्रेन के संदर्भ में रूस–अमेरिका संबंधों पर पुनर्विचार। रूसिया इन ग्लोबल अफेयर्स।
5. कुमार, एस. (2026). कृत्रिम बुद्धिमत्ता और परमाणु प्रतिरोधाभास: दक्षिण एशिया और मध्य पूर्व में प्रतिरोध सिद्धांत पर पुनर्विचार। जर्नल ऑफ वर्ल्ड अफेयर्स: वॉयस ऑफ द ग्लोबल साउथ, 1–16।
6. लियू, एस. (2025). युद्धभूमि से परे: 2024 के इज़राइल–ईरान तनाव वृद्धि के मध्य पूर्व, दक्षिण एशिया और पूर्वी अफ्रीका पर आर्थिक एवं भू-राजनीतिक प्रभाव। एशियन जर्नल ऑफ मिडिल ईस्टर्न एंड इस्लामिक स्टडीज़, 19(2), 130–153। https://doi.org/10.1080/25765949.2025.2553258
7. मल्लाह, आर. आर., जॉर्ज, एल., एवं शर्मा, बी. (2025). माल परिवहन संचालन पर भू-राजनीतिक गतिशीलताओं का प्रभाव: भारतीय उद्योग का एक विश्लेषण। एडवांस्ड इंटरनेशनल जर्नल फॉर रिसर्च, 6(6)।
8. मैककॉल, ए. (2025). भू-राजनीतिक तनाव और वित्तीय संक्रमण: रूस–यूक्रेन युद्ध जैसे संघर्षों से उत्पन्न जोखिमों को महाशक्तियाँ कैसे कम करती हैं।
9. पेट्रिशिया, पी., अरिस्टाविद्या, के., एवं एड्रियानी, एम. (2022). प्रतिबंधों से बचाव: मध्य पूर्व की शक्ति संरचना में चीन–ईरान संबंधों का ईरान पर प्रभाव (सीरिया में ईरान–इज़राइल प्रॉक्सी युद्ध का अध्ययन)। सेंट्रिस जर्नल ऑफ पॉलिटिकल स्टडीज़, 3(2), 118–141।
10. पोपालज़ाय, ए. डब्ल्यू., मीर, एम. आर., एवं मोल, आर. (2025). प्रॉक्सी युद्ध से प्रत्यक्ष टकराव तक: इज़राइल–ईरान संघर्ष (2024–2025) का विकसित होता परिदृश्य। चाइनीज़ जर्नल ऑफ इंटरनेशनल रिव्यू।
11. रिमाप्रदेशी, वाई., सुरवांडोनो, एवं विजया, बी. एस. (2025). 2025 के ईरान–इज़राइल संघर्ष से उत्पन्न संभावित मानव सुरक्षा जोखिम। सोस्पोल: जर्नल सोशल पॉलिटिक, 11 (विशेष अंक), 189–200।
12. रिमाप्रदेशी, वाई., सुरवांडोनो, एस., एवं विजया, बी. एस. (2025). ईरान–इज़राइल संघर्ष की गतिशीलता। सोस्पोल: जर्नल सोशल पॉलिटिक, विशेष अंक, 189–200।
13. रुस्तामली, एल. (2025). 12-दिवसीय इज़राइल–ईरान युद्ध के दक्षिण काकेशस पर प्रभाव: क्या भू-राजनीतिक समीकरणों में फेरबदल हो रहा है या पुरानी राजनीति ही जारी है? पाथ ऑफ साइंस, 11(9)।